International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 251-253

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 251-253
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2015
Accepted: 23-12-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि.प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि.प्र.

वेदान्त दर्शन और रविदास वाणी

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भारतीय दर्शन सम्पूर्ण विश्व दर्शन के लिए प्रकाश स्तम्भ के रूप में माना जाता है। वैदिक दर्शन से बहती यह दर्शन गंगा उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र एवं श्री मद्भागवत् में प्रवाहित होकर आगे बढी हैं। पुराणों ने गूढ विषयों को विस्तार देकर जन साधारण के समक्ष रखा, जिससे सामान्य व्यक्ति तक दर्शन की पावनी गंगा पहुंच सकी।वेदों के उपरान्त आने के कारण उपनिषदों को वेदान्त कहा गया। जो तथ्य वेदों में क्लिष्ट है, स्पष्ट नहीं हो सके, उन्हे सरलतम रूप में उपनिषदों में व्याख्यायित किया गया है। उपनिषदों की संख्या अपरिमित है। वेदों के अंत में आने के बाद वेदान्त स्वयं अपनी परिभाषा प्रकट कर देते हें। वेदान्त में यद्यपि ज्ञानपंथ की अधिक विवेचना है तथापि कर्म एवं भक्ति पक्ष को भी प्रर्याप्त महत्त्व दिया गया है।

गुरू रविदास वाणी में उपनिषदों की दार्शनिक विचारधारा के पर्याप्त संकेत उपलब्ध होते हैं। भारतीय दार्शनिक परम्परा में मुख्यतः ब्रह्म, जीवात्मा, जगत, माया, शरीर आदि तत्वों को ही दर्शन का आधार माना गया है।

उपनिषदों में ब्रह्म के व्यक्त एवं अव्यक्त दोनों रूपों का वर्णन है। संत रविदास जी ने भी अपनी भक्ति पद्धति में ब्रह्म के दोनों रूपों का ही चित्रण किया है।

उपनिषदों में अनिर्वचनीय ब्रह्म का निरूपण है, अर्थात जो शब्द रहित, स्पर्श रहित, रूपरहित, रससहित और गंधरहित तथा अविनाशी, नित्य, अनादि अनन्त महान सर्वश्रेष्ठ है। एक प्रमाण कठोपनिषद में मिलता है।

अनिर्वचनीय ब्रह्म के अतिरिक्त निर्गुणता वाचक विशेषताओं से युक्त, विभावात्मक शैली द्वारा निर्गुण ब्रह्म, नाकारात्मक शैली द्वारा निर्गुण ब्रह्म, नेति–नेतिवाद वाला ब्रह्म, शब्द ब्रह्म, सत्य एवं ज्ञान स्वरूप ब्रह्म का भावना निर्मित स्वरूप, भक्त–वत्सल रूप, भक्त रक्षक रूप, भक्त तारक रूप तथा भक्त रक्षार्थ अवतार, लगभग उपरोक्त सभी ब्रह्म रूपों का संत रविदास की भक्ति पद्धति में वर्णन है।

निर्गुणता वाचक रूप में संत रविदास के ब्रह्म निश्चल, निराकार, अज, अनुपम, अगम, अगोचर एवं अक्षर हैं।

> ''निहचल, निराकार, अज, अनुपम, निरभै अति गोविंदा।
> अगम, अगोचर, अक्षर, अतरक निरगुण अति अनंदा।''[1]

विभावात्मक शैली में ब्रह्म का वर्णन श्वेताश्वतरोपनिषद में मिलता हैः–

> ''अपाणि पादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुःस श्रृणोत्य कर्णः
> सवेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ना तमाहु एनं पुरूषं मात्तक्।''[2]

संत रविदास की भक्ति पद्धति में नकारात्मक शैली के निर्गुण ब्रह्म को अपनाते हुए कहा है कि ब्रह्म न चॉद है न सूर्य न रात है न दिवस न ही धरती है और न ही आकाश।

> ''चंदसुर नहीं, राति दिवस नाहि, धरनि अकास न भाई।
> करम अकरम नहीं सुभ असुभ नहीं का कहि देहु बड़ाई।''

संत रविदास जी ने वेद वेदान्त की तरह एक ब्रह्म को स्वीकार किया है–

> ''द्रिस्टि अद्रिस्टि गेय अरू ग्याता, एकमेव है रविदासा।''[3]

शब्द ब्रह्म अर्थात प्रणव, ओंकार आदि का वर्णन हैं संत रविदास ने राम को रसायन रूप कहकर इसकी रस–रूपता या आनन्द विशिष्टता का वर्णन किया है।
गुरू रविदास जी ने ब्रह्म के प्रायः दोनों रूपों का समान अधिकार से प्रयोग किया है। इसमें संदेह नहीं कि कहीं उनका झुकाव अगर सगुण ब्रह्म की ओर है तो कहीं वे निगुर्ण ब्रह्म की ओर झुकते दिखाई देते हैं।
गुरू रविदास जी ने भी भावना में वैष्णव संतो की तरह अनेक रूपों से ब्रह्म के सगुण रूप को देखा है।
जैसे गुरू जी ईश्वर को चुनौती देते हुए कहते हैं कि आप मुझ जैसे पापी की सेवा स्वीकार कर स्वयं पतित–पावन की उक्ति चरितार्थ कीजिए।

''रविदास दास की सेवा मानहु देवा, पतित पावन नाम परगट करीजै।''[4]

गुरू रविदास जी ने निकृष्टतम पापी को भी प्रभु–भक्ति से पार उतरने का वचन दिया है। वे कहते हैं कि उस प्रभु की कृपा से शर्बरी, जटायु गिद्धराज, अजामिल, सदना कसाई असंख्य पापी भी तर गए, मैं किस–किस का नाम गिनाऊं। प्रभु तो भक्तों के लिए पारस हैं।

''गनिका भी किस करमा जोग, पर पुरसन सो रमती भोग,
निसि बासर दुस्करम कमाई, राम कहत बैकुंठे जाई।''[5]

तथा–

''सवरी गीध अजामिल सदना, राम कृपा गनिका तरि जावत
कबन–कबन पापी जन तरिओ, कहि रविदास मनइ नहि आवत।''[6]

गुरू जी की वाणी के अनेक पद इस बात का परिचय देते हैं कि गुरू जी भारतीय दर्शन एवं सस्कृति से प्रभावित थे, वही वैष्णव भक्ति के आधार स्तम्भ अवतारवाद से भी प्रभावित लगते हैं। यूं तो कई आलोचक इस तथ्य को 'अनायास वर्णन' कहकर आलोचना करते हैं। वस्तुतः संत रविदास जी ने भारतीय शास्त्रों विशेषतः भागवत पुराण से कई उदाहरण लिए जो उनकी पौराणिक दर्शन में विश्वास एवं आस्था व्यक्त करते हैं।
कठोपनिषद में वर्णित है कि ब्रह्म सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है। रविदास वाणी में प्रभु की सर्वव्यापकता का ऐसा ही वर्णन द्रष्टव्य है। वे ब्रह्म की सर्वव्यापकता का उल्लेख करते हुए कहते हैः–

''सब में हरि है, हरि में सब है।''[7]
''पूरन ब्रह्म बसै सब ठाई।''[8]

संत रविदास जी ने सगुण भाव में तल्लीन होकर ब्रह्म को सर्वव्यापक बताया है। वह ब्रह्म आदि अन्त सभी परिस्थितियों में एक रस रहने वाला है।

''आदि मध्य और अन्त ऐक रस, तार तूंब नही ताई,
भावर जंगम कीट पतंग, पूरि रहयौ हरि राई।''[9]

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संत रविदास जी का दर्शन वेदान्त दर्शन से प्रभावित है तथा प्रर्याप्त साम्य रखता है। उनकी वाणी के कई पद्य वेदान्त के मूलभाव से परिपूर्ण है और संत रविदास ने इन्हे सहज सरल रूप में उपस्थित किया है।

जीवात्माः– संत रविदास जी ने आत्मा का वर्णन वेदान्त के अनुरूप किया है। श्वेताश्वतरोपनिषद में आत्मा को 'हंस' मुण्डोपनिषद में आत्मा के ब्रह्म मात्र स्वरूप का दर्शन है, कठोपनिषद में आत्मा को रथी शरीर को रथ बताया गया है, लगभग ऐसी ही संज्ञा से संत रविदास जी ने आत्मा को अभिभूत किया है।

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेवस्तु।
बुद्धि तु सारथी विद्धि मनःप्रणहमेव च।''

गुरू रविदास जी वेदान्त से पूर्णतया सहमत है। वह कहते हैं कि प्रत्येक आत्मा में हरि अर्थात परमात्मा तथा प्रत्येक आत्मा परमात्मा अधीन है।

''सब में हरि है, हरि मैं सब है, हरि अपनी जानि जाना।''[10]

उपनिषदों में भी आत्मज्ञान का विस्तृत विवेचन है। वृहदारण्यकोपनिषद में तो कहा गया है कि आत्मा का ज्ञान प्राप्त करें। आत्मा है,[11] इस प्रकार उसकी उपासना करो।[12]

आत्मा वा और दष्टव्यः।[3] आत्मेत्येवोपासीत

उपनिषदों में आत्मा को ज्योतिस्वरूप माना गया है। वृहदारण्यकोपनिषद में कहा गया है कि' वह पुरूष अर्थात आत्मा ज्योति है'''
गुरू रविदास जी ने आत्मा का वर्णन वेदान्त के अनुसार किया है। गुरू रविदास वाणी से ही अनेक पदों से हम उदाहरण ले स्पष्ट कर सकते हैं। गुरू रविदास जी के अनुसार चारों दिशाओं में ज्योति का प्रकाश हो रहा है, यह आत्मा भी उसी ज्योति 'ब्रह्म' के समान ज्योति में मिल गई है।

''पश्चायं पुरूष यश्चासावादित्ये स एकः।''[13]

गुरू रविदास वाणी में हमें वेदान्त का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अतः संत रविदास भी इस शरीर को रथ एवं आत्मा को चलाने वाला सारथी या रथी स्वीकार करते हैं।

''रथ को चतुर चलावनण हारे।
खिण हॉके खिणं उभें सखै, न ही आन को सारौ।
जब रथ रहै सारथीया के, तब कौ रथहिं चलावे। 14

जगत

गुरू रविदास जी ने जगत को वेदान्तानुसार नाशवान होने के कारण जगत को मिथ्या या असत् माना है। रविदास वाणी में भी जगत को वट बीज जैसा बताया गया है–

''वट के बीज जैसा आकार, पसरयौ तीनि लोक पसार।
जहॉ का उपज्या तहॉ विलाई, सहज सुनि में रहयौ समाई।''
भारतीय दर्शन में जगत बुद्धिजीवियों के विचारणीय विषय में से एक प्रमुख विषय है। जगत के विषय में सर्वमान्य सिद्धांत प्रायः

वेदान्त का ही माना गया है। वेदान्त में आध्यात्म के अनुसार ब्रह्म ही को एक मात्र सत्ता माना गया है। छान्दोग्योपनिषद में कहा गया है कि 'सर्व खल्बमिदं ब्रह्म।' अर्थात यह सकल विश्व ब्रह्म ही है तथा इसके अतिरिक्त कुछ और नहीं। परन्तु ब्रह्म इसलिए सत है क्योंकि वह अविनाशी है तथा विनाशशील होने के कारण जगत असत् है।
मेरे विचार से गुरू रविदास जी के दर्शन पर वेदान्त का सर्वाधिक प्रभाव है अतः वह भी मानते हैं कि ब्रह्म तीनों लोकों में व्याप्त है।

माया

माया का उल्लेख वेदों एवं पुराणों में भी मिलता है। कठोपनिषद में कहा गया है–आत्मा स्वरूप परम पुरूष सब प्राणियों में रहता हुआ

भी माया के पर्दे में छिपा रहता है। अतः सब को प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता। वह केवल सूक्ष्म तत्त्वों को समझने वाले तीक्ष्ण बुद्धिशील ज्ञानियों प्रेमियों या भक्तो को ही दिखाई देता है।

''एव सर्वेषु भूतेषु गूढ़ात्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वगश्यया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्म दर्शिमिदं।''[15]

संत गुरू रविदास जी भी मायाजाल से परिचित है। संसारिक माया जाल की भांति गुरू रविदास जी ने अपने प्रभु अर्थात परमात्मा को 'भक्ति' के प्रेमजाल में फंसाया है तथा प्रभु को चुनौती दे रहे हैं कि यदि प्रभु अपने हमें संसारिक मायाजाल में फंसाया है, तो मैनें भी आपको प्रेम भक्ति के जाल में जकड़ा हुआ है। परन्तु मैं तो अपनी भक्ति से इस संसारिक माया जाल से छूट जाऊँगा परन्तु आप मेरी प्रेमाभक्ति के जाल से छूटने का उपक्रम करें।
गुरू रविदास भी भारतीय दर्शनानुसार माया को ब्रह्म का भ्रमजाल मानते हैं। संत रविदास का मानना है कि इस माया से केवल प्रभु के प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति ही बचा सकती

रविदास वाणी में मोक्ष

भारतीय दर्शन में मुक्ति अथवा मोक्ष का वर्णन है। वेदों के उपरांत पुराणों में भी मुक्ति की चर्चा है। मुण्डोपनिषद में मोक्ष को नदी का सागर में मिलन रूप में व्यक्त किया है। गुरू रविदास वाणी में भी मोक्ष वर्णन दृष्टव्य है।

शरीरः—वेदान्त में शरीर को नश्वर माना गया है। श्वेताश्वतरोपनिषद में शरीर को 'नगर' कठोपनिषद में शरीर को रथ कहा है। संत रविदास ने भी शरीर को नगर कहकर शरीर की नश्वरता का उल्लेख किया है।

भारतीय दर्शन में कर्मवाद एवं रविदास वाणीः—

उपनिषदों में कर्म महत्त्व पर विशद वर्णन हुआ है। वैदिक काल से कर्मो को दो रूपों में बांटा गया है। सकाम कर्म और निष्काम कर्म। उपनिषदों में विशेषतः मुण्डकोपनिषद में सकाम कर्म की आलोचना की गई है तथा निष्काम कर्म की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।

संत रविदास जी ने भी उपनिषदों के अनुसार ही निष्काम कर्म का ही प्रतिपादन वाणी में किया हैः—
'वरन सहित जो जापै नामू सो जोगी केवल निहकामु।''[16]

संत रविदास वाणी पर अन्य दर्शनों की अपेक्षा वेदान्त का प्रभाव ज्यादा है। कठोपनिषद में कहा गया है कि मूर्ख अज्ञानी लोग अज्ञानता एवं अहं के अंधेरे में फंसे अपने आप को महान समझने लगते है, परन्तु वास्तव में वे असत्य की परिधि में आवेष्टित होते है।

''अविद्यायामन्तरे वर्तमानः स्वयं धीराः पण्डितमन्यमानाः।
दन्द्रम्भमाणः परियन्ति मूढ़ा अन्धेनैवनीयमानायथान्धाः।''

सन्दर्भ सूचि

1. वाणी पद्—3.6.
2. श्वेताश्वतरोपनिषद—3.6.
3. र. वा.—पद—28
4. र. वा.—पद—09
5. र. वा.—पद—90
6. र. वा.—पद—39
7. र. वा.—पद—10
8. र. वा.—पद—53
9. र. वा. पद—28
10. तैतिरीयोपनिषद—पद 10 र. वा.
11. वृहदारण्यकोपनिषद—2.4.5.
12. वृहा. 1.9.7.
13. तैतिरोपनिषद— 2.2
14. र. वा.—पद—80
15. र. वा. पृ0—95
16. र. वा. पद 76